International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 2, Mar.-Apr., 2025, pp: 1485-1489 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

पर्यावरण चेतना एवं सांस्कृतिक स्वरूपः एक विवेचना

शोधार्थी जमीला खांन

शिक्षाशास्त्र विभाग

सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

डॉ. यूसुफ सलीम

सह प्राध्यापक

शिक्षाशास्त्र विभाग

सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

शोध सारांश

पर्यावरण प्रदषण की समस्या आज पूरे विश्व के वैज्ञानिकों एवम् पर्यावरणविदों के लिए एक चुनौती बन गयी है। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि वायुमंडल में इसी रफ्तार से प्रदूषण फैलता रहा तो 21 वीं सदी के अंत तक करोड़ों मानव एवम् पशु–पक्षियों का अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा। एक अनुमान के अनुसार लगभग पाँच अरब टन कार्बन डाई आक्साइड (Co^2) गैस प्रतिवर्ष वायुमंडल में घुल रही है। परिणामतः पृथ्वी का तापक्रम बढ़ने के साथ–साथ भविष्य में सागर के जल–स्तर में प्रतिवर्ष लगभग दो मिलीमीटर की बढ़ोत्तरी की संभावना है।

संकेत शब्द (Key Words)– भारत, सांस्कृति, परिवेश, पर्यावरण, विवेचना

पारिस्थितिकीय असंतुलन की बिगड़ती स्थिति को देखते हुये आज हजारों अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं निजी संस्थाओं के द्वारा पर्यावरण के प्रति समर्पित होकर कार्य करने के बावजूद प्रदूषण नियंत्रण पर अंकुश नहीं लग पा रहा है। ऐसी परिस्थिति में आम लोगों में पर्यावरण के प्रति चेतना जगाना बहुत जरूरी है। जिस पर्यावरण चेतना की बात विकसित देश आज कर रहे हैं, ववह आदिकाल से भारतीय मनीषा की मूल आधार रही है। आज जरूरत है, भारतीय संस्कृति के मान्य विश्वासों, आचारों और रीतियों को अपनाये रखने की तथा उनका प्रचार करने की भारतीय समाज में जन्म, विवाह और मृत्यु के शास्त्र निरूपित संस्कार भी प्रदूषण मुक्त वातावरण के प्रबल पक्षधर रहे हैं।

अथर्ववेद में लिखा गया है कि– यह समस्त जगत सात मूल पदार्थो से बना है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश, तन्मात्र और अहंकार।[1] ये सात पदार्थ ही न्यूनाधिक परिमाण में सम्मिलित होकर संसार की प्रत्येक वस्तु को एक विशिष्ट रूप देते हैं।'

वहीं यजुर्वेद में पृथ्वी को प्रदूषण रहित और सुख प्रदान करने हेतु प्रार्थना की गयी है। स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरे निवेशनी यच्छा नः शर्म सप्रथा अप न शौशुववधम्। अर्थात् हे पृत्वी, तू हमारे लिए सब ओर से संकटहीन और सुखपूर्वक बैठने योग्य हो। पुनः यजुर्वेद के अध्याय 13 सूक्त 28 में वातावरण, पृथ्वी, दिवा–रात्रि तथा वनस्पतियों के मादुर्य होने के लिए स्तुति की गयी है। अथर्ववेद के द्वादश कांड में सूक्त 1 से 63 तक पृथ्वी की स्तुति में मंत्र लिखे गये हैं तथा मुख्य तौर पर कहा गया है कि जिस पृथ्वी में चढ़ाई और उतराई और

समतल स्थान हैं, जो अनेक सामर्यो से औषधियों को धारण करती है, वह पृथ्वी हमें भली प्रकार प्राप्त हो और हमारी कामनाओं को सफल करें। समुद्र, नदियों और जल से सम्पन्न पृथ्वी जिसमें कृषि और अन्न होता है, जिससे यह प्राणवान संसार तप्त होता है तथा वनस्पति उत्पन्न करने वाले वृक्ष जिस भूमि पर अडिग रूप से खड़े रहते हैं, ये वृक्ष, औषधादि के रूप में सब की सेवा करते हैं। ऐसी धर्म–आश्रिता पृथ्वी का हम स्तवन करते हैं।

प्रकृति ने मानव पेड़–पौधों के बीच ऐसा तालमेल बिठाया है कि मानव एवं पेड़–पौधे एक–दूसरे के बिना जीवित नहीं रह सकते हैं। मानव द्वारा छोड़ी गयी Co_2 गैस पेड़–पौधे लेते हैं, उसी प्रकार पेड़–पौधों द्वारा चोड़ा गया 0_2 गैस मानव का प्राणवायु है। अतः पेड़–पौधे तथा मानव एक–दूसरे जीवन–रक्षा के पूरक हैं। लेकिन अत्यन्त दुःख की बात है कि आज उसी पवित्र भारतभूमि का केवल 19% भाग किसी प्रकार पादपों से ढकी रह गयी है, जबकि सरकारी संकल्प के अनुसार कम से कम 33% भूमि का वनाच्छादित होना आवश्यक है।

ऐसी परिस्थिति में यदि हम यजुर्वेद के अध्याय 20 में मंत्र 17 पर गौर करें तो हम पाते हैं कि हमारे पूर्वज वनस्पति की रक्षा के लिए कृतसंकल्पित थे क्योंकि पापों के साथ–साथ ग्राम तथा जंगल में वृक्ष काटना तथा पशुओं को मारना घोर पाप माना गया है। भारतीय संस्कृति में वन रक्षको के रूप में यक्ष और यक्षिणी की कल्पना की गयी है। दिन में प्राणवायु छोड़ने वाले पेड़–पौधों से सांध्य उपरांत संसर्ग धार्मिक आचरण के विरूद्ध घोषित किया गया है। पौधे से विलग होने के कष्टवश तो शकुन्तला को पुष्प तोड़ने में भी संकोच हुआ था। वृक्ष पूजा के जरिये मूल्यवान पेड़–पौधों की रक्षा हुयी। नीम, अशोक, चंदन और कमल का उसके विशिष्ट गुणों के लिए गुणगान हुआ।

सैन्धव सभ्यता में वृक्ष पूजा एवं पशुपूजा की परंपरा प्रचलित थी। भारतीय वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला तथा साहित्य में प्रकृति पूजा के पुष्ट मिलते हैं। अंजता के चित्रों तथा साँची के तोरण द्वारों में वृक्ष पूजा के स्पष्ट संकेत मिलते हैं। जैन और बोद्ध धर्मों में वृक्ष पूजा का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भगवान बुद्ध के जीवन की अधिकांश महत्वपूर्ण घटनाओं का पंबंध वृक्ष से है। वेदों में प्रकृति के परमात्मा स्वरूप में स्तुति है। महाकाव्यों एवम् स्मृति साहित्यों में वृक्ष पूजा के स्पष्ट संकेत मिलते हैं। नारद संहिता में 27 नक्षत्रों के पृथक–पृथक वृक्षों का उल्लेख है जो उस नक्षत्र से संबंधित व्यक्ति का पूज्य कुलवृक्ष, सवार्थ मनोकामना का दाता है। पांच पवित्र छायादार वृक्षों के समूह – पीपल, बेल, बरगद, ऑवला तथा अशोक को पंचवटी कहा गया है।'

समद्र मंथन से प्राप्त कल्पवृक्ष को 14 रत्नों में एक माना जाता है तथा इसे देववृक्ष की संज्ञा दी गयी है। सिंधु घाटी सभ्यता से आज पर्यन्त पीपल वृक्ष की पूजा होती आ रही है। अथर्ववेद में पीपल वृक्ष की स्तुति की गयी है। आज भी यह धार्मिक मान्यता प्रचलित है कि पीपल वृक्ष पर ब्रह्म का निवास होता है तथा इस वृक्ष को काटने से वंशनाश होता है। स्पष्टतः इस अवधारणा का वैज्ञानिक कारण पीपल द्वारा वातावरण में सबसे अधिक मात्रा में आक्सीजन गैस प्रदान करना है। इसी प्रकार तुलसी पूजा का हिन्दू धर्म एवम् संस्कृति में अति विशिष्ट महत्व है। आंगन में तुलसी लगाना और प्रतिदिन जल डालना पुण्यकर्म माना जाता है। तुलसी पत्ता का प्रयोग विभिन्न आयुर्वेदिक औषधियों के रूप में किया जाता है। यह वातावरण को विषाणुमुक्त रखती है। नीम भारत की प्राचीन सम्पदा है। इसे शांति का प्रतीक भी माना जाता है। नीमपत्ती, गुठलियों एवम् छाल का प्रयोग विभिन्न आयुर्वेदिक औषधियों के रूप में किया जाता है।

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 2, Mar.-Apr., 2025, pp: 1485-1489 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

हिन्दू संस्कृति में पूजा, यज्ञ और हवन पद्धति द्वारा वातावरण को प्रदूषित होने से बचाया जाता है। पूजा में पंच पल्लव के रूप में आम, पीपल, पाकड़, गूलर तथा वट इन पांच वृक्षों के पल्लवों का प्रयोग कलश में किया जाता है। पूजा हवन में नवग्रहों के लिए नवग्रहकाष्ट के रूप में सूर्य के लिए मदार, चन्द्रमा का पलास, मंगल का खैर, बुध का चिचिड़ी, बृहस्पति का पीपल, शुक्र का गुलर, शनि का शमी, राहु का दूर्वा और केतु का कुशा समिधाकाष्ठ कहा गया है। इनके अतिरिक्त देवताओं के हवन में पलाश, आम, तथा कुशा भी प्रयुक्त होता है मन्दार की समिधा रोग का नाश करती है, पलाश सब कार्यों को सिद्ध करने वाला है, खैर धन देने वाला है, चिचिड़ी से इष्टलाभ, पीपल से प्रजालाभ, गूलर से स्वर्गप्राप्ति, शमी से पापनाश, दूर्वा से दीर्घायु और कुशा से सम्पूर्ण मनोरथ की पूर्ति होती है। अथर्ववेद काण्ड 4, अ. 8 सूक्त 37 में पांच हवन–दृव्य गुगूल, पीला नन्दी, करायल, औक्षगन्धी तथा प्रमर्डनी का वर्णन है।।

औषधि के रूप में अनेक वृक्षों की स्तुति का वर्णन अथर्ववेद में हमें मिलता है। अथर्ववेद अध्याय 19 सूक्त 38 (मंत्र 1,2, तथा 3) में कहा गया है कि जो राजा गूगल रूप औषधि की नस्य (धूप आदि) लेता है, उसे व्याधियाँ पीड़ित नहीं करती। अथर्ववेद अध्याय 19 सूक्त 36 मंत्र 1 तथा 5 में शतावर की स्तुति करते हुए कहा गया है कि शतावर समस्त त्वचा रोगों को दूर करता है।[2] अथर्ववेद कांड 5 अ. 2 सूक्त 5 (मंत्र 3 तथा 4) में लाख वृक्ष की स्तुति में कहा गया है कि यह क्षयनाशिनी है। अथर्ववेद कांड 6 अ. 3 सूक्त 30 में शमी वृक्ष की महता पर प्रकाश डालते हुए बतलाया गया है कि हे शमी। तेरा मद केशोत्पादक और उनकी वृद्धि करने वाला है।

जंगल तथा वनस्पति का आदिवासी जीवन से गहरा संबंध है। पीपल, नीम, वट कीपूजा के साथ–साथ अन्य वृक्षों की पूजा करते हैं। गोंडों के लिए शाजा वृक्ष पवित्र है। कुछ आदिवासी काष्ठ देवता के रूप में महुआ के वृक्ष की पूजा करते हैं, कुछ तेन्दु के पत्ते की। वे वन देवी तथा जलदेवी की भी पूजा करते हैं। एस. सी. मित्रा की पुस्तक "ऑन ए. फ्यू मिथस एंड लेजेंड एबाउट, अशोका ट्री' में लिखा है कि अशोक के चमकीले फूल जो धीरे–धीरे लाल रंग में परिवर्तित होता है साहित्यिक ग्रन्थों में कामदेव के पाँच तीरों में से एक माना गया है। बिहार के हो तथा बिरहोर जनजातियों में सवई घास की उत्पत्ति का धार्मिक अर्थ में चित्रण किया गया है।

प्राचीन महर्षियों के जीवरक्षा तथा अहिंसावादी सिद्धांत ने पर्यावरण संतुलन को बनाए रखा किन्तु आज की स्थिति भिन्न है। एक पर्यावरण संस्था के सर्वेक्षण के मुताबिक प्रदूषण के शिकार होकर इस पृथ्वी के तीन सौ से अधिक जातियों एवं उपजातियों के जीव लुप्त हो चुके हैं। अन्तर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षम आई.यू.सी.एन. के भविष्य में प्रदूषण के कारण चार सौ पक्षियों, तीन सौ स्तनधारी जंतुओं, दो सौ प्रकार की जलचर मछलियों एवं डेढ़ सौ उभयचर, रेंगने वाली सरीसर्प जातियों के लुप्त होने की संभावना प्रकट की है। इसका निदान यजुर्वेद के श्लोकों में ढूंढा जा सकता है। जो सभी सर्प या प्राणी स्वर्ग के ज्योतिर्मय स्थान में है, जो हमें दिखाई नहीं पड़ते अथवा जो सूर्य की रश्मियों में याजल में निवास करते हैं उन सब प्रकार के जीवों को नमस्कार। भारतीय धर्म में चीटियों को सत्तू व शक्कर खिलाना तथा पक्षियों को दाना तथा पानी डालना पुण्यकर्म माना जाता है। रामायण में श्री राम का पेड़–पौधों से वार्तालाप के साथ–साथ बंदर, भालूसे मैत्री के प्रचुर प्रसंग मिलते हैं। जातक कथाओं और पंचतंत्र प्राणी जगत के बीच परस्पर संवाद के श्रेष्ठ उदाहरण है।

भारतीय संस्कृति में आराध्यदेव गणपति, हनुमान, गरूड़ और नरसिंह आदि रूपों में मनुष्य एवम् जीवों की देह व शक्तियाँ एकाकार होकर अलौकिक

शक्तियों के रूप में अवतरित हुयी।[3] भगवान विष्णु के 10 अवतारों में प्रारंभिक तीन अवतार क्रमशः मत्स्य, कच्छप तथा वराह जीव रूप में तथा चौथा अवतार नरसिंह, मानव तथा पशु में हुआ। इसी प्रकार पशुपति शिव को पशुओं स्वामी कहा गया है। सर्प, चूहा, मोर, नन्दी, सिंह, सब मिलकर शिव का संपूर्ण परिवार कहलाये। इसी प्रकार यजुर्वेद अध्याय 24 में मंत्र 1 से 40 तक विभिन्न देवी–देवताओं के साथ विभिन्न जीव जंतुओं के संबंधों को बताया गया है। हिन्दू संस्कृति में वेतरणी पार कराने वाली या पारलौकिक पापों से मुक्ति दिलाने वाली गौ–माता की पूजा होती है तथा गौ हत्या को जघन्य पाप माना जाता है। अथर्ववेद कांड 3 अध्याय 3 सूक्त 14 में गाय की स्तुति की गई है।

जल की महत्ता और उसकी पवित्रता पर भी भारतीय संस्कृति ने विशेष बल दिया है, किन्तु आज एक सरकारी अनुमान के अनुसार विश्व के 50 प्रतिशत जलाशय भंडार पूरी तरह से प्रदूषित हो चुके हैं। भारत में जलाशय भंडार का 60 प्रतिशत जल पूरी तरह से प्रदूषित है। देश के दामोदर नदी को वैज्ञानिकों ने विश्व की सबसे प्रदूषित नदी की संज्ञा दी है। जल प्रदूषण निषेध के प्रचुर उपाय भारतीय संस्कृति में विद्यमान है।[4]

स्वात्रा पीता भवत यूयमायो अस्माकमन्तरूदरे सुशेवाः।
ता अस्माभ्यमयक्ष्मा अनभीवा अनावतः स्वदन्तु देवीरमृत शतावृधः।

अर्थात् हे जलो! मेरे द्वारा पान किये जाने पर तुम शीघ्र ही जीर्णता को प्राप्त होओं और हम पीने वालों के उदर को सुख देने वाले होओ। यह जल यक्ष्मा रहित, अन्य रोगों के नाशक, प्यास के बुझाने वाले, यज्ञवृष्टि के निमित्त रूप दिव्य और अमृत के समान है वह हमारे लिए सुस्वाद हो। इसी प्रकार यजुर्वेद के अध्याय 6 (मंत्र 17) अध्याय 1 से 5 तक, अध्याय 11 मंत्र 50 से 52 तक तथा अथर्ववेद में जल देवता की स्तुति की गई है।

भारतीय संस्कृति में जल आत्मिक शुद्धि का साधन माना गया है। जल के सभी श्रोतों जैसे– नदियों, तालाबों, कुओं की पूजा आदिकाल से होती आ रही है। निदियों में यमुना, सरस्वती, कावेरी, कृष्णा, गोदावरी, के अलावा भारत को सबसे पवित्र मानी जाने वाली गंगा नदी की पूजा होती है। गंगा पाप को नाश करने वाली है। गंगा स्नान से पाप मुक्ति होती है साथ ही गंगा जल का प्रयोग देवताओं की पूजा तथा मानव आत्मशुद्धि के लिए किया जाता है। जल के स्त्रोतों को गंदा करना या थूकना धार्मिक आचरण के विरूद्ध माना जाता है।

भारतीय संस्कृति के अंग पर्व और त्यौहार भी वातावरण की शुद्धता के समर्थक है। दीवाली के पर्व पर प्रज्वलित दीप वायु को ओर पवित्र नदी में डाला गया तांबे का सिक्का जल को स्वच्छ रखता है। होली, लोढी, गुड़ी पड़वा पोंगल, बीहू भगौरिया आदि पर ऋतुओं और नई फसल का स्वागत किया जाता है। सावन में प्रकृति का नैकट्य प्रदान करने वाले तीज–त्यौहार और उसके उत्सव अनुपम है।

इस प्रकार मनुष्य जीवन से जुड़ा यह पर्यावरण संरक्षम भारतीय संस्कृति में गहरा रचा–बसा है। अन्ततः सभी विश्वज्जनों के समक्ष यजुर्वेद अध्याय 17 मंत्र 20 को रखने के साथ ही अपने विचार को पूर्णविराम देना चाहूंगा। "वह वन किस प्रकार का था? वह वृक्ष कौन सा था? जिस वन और वृक्ष के द्वारा विश्वकर्मा ने इस पृथ्वी को अलंकृत किया है, विद्वानों, सब भुवनों की धारण करने वाले विश्वकर्मा ने जो स्थान निश्चित किया है उस पर मननपूर्वक विचार करें।''

❖ शोधार्थी समाजशास्त्र, जीवाजी वश्वविद्यालय, ग्वालियर

संदर्भः

1. शर्मा, श्रीराम, अथर्ववेद, प्रथम खंड संस्कृति संस्थान, बरेली, 1996

2. शर्मा, श्रीराम, अथर्ववेद, द्वितीय खंड, संस्कृति संस्थान वरेली, 1998
3. विलर्पिड ग्रिर्यसन, दी मारिया गौंडस ऑफ बस्तर आक्सफोर्ड प्रकाशन दिल्ली, 2009
4. शर्मा, श्रीराम, यजुर्वेद प्रथमखण्ड संस्कृति, वरेलीं, 2000

रफ

प्राचीन महर्षियों के जीवरक्षा तथा अहिंसावादी सिद्धांत ने पर्यावरण संतुलन को बनाए रखा किन्तु आज की स्थिति भिन्न है। एक पर्यावरण संस्था के सर्वेक्षण के मुताबिक प्रदूषण के शिकार होकर इस पृथ्वी के तीन सौ से अधिक जातियों एवं उपजातियों के जीव लुप्त हो चुके हैं। अन्तर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षम आई.यू.सी.एन. के भविष्य में प्रदूषण के कारण चार सौ पक्षियों, तीन सौ स्तनधारी जंतुओं, दो सौ प्रकार की जलचर मछलियों एवं डेढ़ सौ उभयचर, रेंगने वाली सरीसर्प जातियों के लुप्त होने की संभावना प्रकट की है। इसका निदान यजुर्वेद के श्लोकों में ढूंढा जा सकता है। जो सभी सर्प या प्राणी स्वर्ग के ज्योतिर्मय स्थान में है, जो हमें दिखाई नहीं पड़ते अथवा जो सूर्य की रश्मियों में याजल में बसा करते हैं उन सब प्रकार के जीवों को नमस्कार। भारतीय धर्म में चीटियों को सत्तू व शक्कर खिलाना तथा पक्षियों को दाना तथा पानी डालना पुण्यकर्म माना जाता है। रामायण में श्री राम का पेड़–पौधों से वार्तालाप के साथ–साथ बंदर, भालूसे मैत्री के प्रचुर प्रसंग मिलते हैं। जातक कथाओं और पंचतंत्र प्राणी जगत के बीच परस्पर संवाद के श्रेष्ठ उदाहरण है।